रानो सूरी
आर्ट ऑफ लिविंग एक्सपर्ट

जिंदगी के मेले में आप क्यों अकेले हैं

नोएडा में समाज से नाराज दो बहनों ने अपने को घर में कैद कर लिया था। दुर्भाग्य से उनमें से एक की मौत हो गई। समाज के मेले में अकेले पड़ते जाते लोगों को एक नई जीवन-दृष्टि की जरूरत है

गानों में, गजलों में और कवियों की कविताओं में, जिंदगी के कई अफसाने बने हैं। किसी ने जिंदगी को सुहाना सफर माना, तो किसी ने इसकी तुलना कभी न रुकने वाली गाड़ी से कर दी। जैसा मूड हुआ जिंदगी की परिभाषा भी वैसे ही गढ़ दी गई। सात रंगों से सराबोर जिंदगी में से जिसे जो रंग पसंद आया, उसे अपने लिए चुन लिया। जिंदगी का एक रंग स्याह भी है, जिसे चुना था नोयडा की दो बहनों ने। अकेलेपन से जूझती ये दोनों बहनें पढ़ी-लिखी थीं, नौकरी भी करती थीं, मगर जिंदगी से मायूस इन दोनों बहनों ने अंधेरे को ही अपना जीवन क्यों चुना? कुछ वक्त पहले एक ऐसी ही घटना हुई थी दिल्ली में, जहां तीन बहनों ने अपने को ऐसे ही बंद कर रखा था, जिनमें से एक की मौत हो गई थी। ये सारी घटनाएं समाज में बढ़ते अकेलेपन और डिप्रेशन की झलक हैं। अब ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या जिंदगी के मायने इतने बौने हो चुके हैं कि किसी के जाने से दूसरे की जिंदगी ही खत्म हो जाती है? अकेलापन बेशक आज के समाज का भयावह सच बन गया है, जो संयुक्त परिवार के टूटने से उपजा है। कहते हैं कि इंसान एक सामाजिक प्राणी है, लेकिन आधुनिक समाज में उसकी असामाजिकता बढ़ गई है। लोग आत्मकेंद्रित होने लगे हैं। ये स्थिति मेट्रो सिटी में ज्यादा देखने को मिल रही है। इन्हीं कारणों से लोग अकेलेपन का शिकार हो रहे हैं।

पड़ोस भी परिवार है!

मेट्रो सिटी की चकाचौंध ने जीवनशैली को ज्यादा जटिल बना दिया है। जिसमें एकल परिवार ही चल पा रहे हैं। महंगाई और नौकरी की शर्तों ने व्यक्ति को अपनी पूरी फैमिली से अलग, दूर रहने पर विवश कर दिया है। चाहे पति-पत्नी और बच्चों का एकल परिवार हो या नौकरी करने आए युवा। मुश्किल के पलों में हर किसी को दिल की सुन लेने वाला और सही राय देने वाला एक शख्स जरूरी होता हैं, जो बड़े शहरों में मिलना मुश्किल है। जरा ध्यान दीजिए कि आप अपने पड़ोसी से कितनी बात करते हैं या उनके बारे में कितना जानते हैं? छोटे शहरों में आज भी लोग छोटी-छोटी बातों को लेकर घुलते-मिलते रहते हैं। कभी ताजा बनी कढ़ी के बहाने, तो कभी किसी पड़ोसी को प्रसाद देने के बहाने, अकसर लोग मिलते रहते हैं। सच कहें तो पूरा मुहल्ला परिवार जैसा होता है। लेकिन अपने-अपने की भावना अब इस परिवार को भी खत्म कर रही है। हमें कोशिश करनी चाहिए कि यह परंपरागत परिवार हम जहां जाएं हमारे साथ जाए। पड़ोसी हमारे दोस्त हों, हम उनका सुख-दुख जानें और वे हमारे सुख-दुख में भागीदार हों, ऐसा ढांचा तैयार करें।

इस बार की कवर वुमन हैं, बिजनौर की प्रिया वर्मा। उन्हें हमारी शुभकामनाएं!

रूपायन
अमर उजाला
सी-21-22
सेक्टर-59
नोएडा, उप्र
rupayanwoman@amarujala.com

रूपायन वुमन कवरः प्रिया वर्मा, बिजनौर (यूपी)